आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2213 • उदयपुर, गुरुवार 14 जनवरी, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

देश के नाम एक और अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि

देश के नाम एक और उपलब्धि हासिल हुई है। समाचार एजेंसी पीटीआई की रिपोर्ट के मुताबिक रामसार प्रस्ताव संधि के तहत अंतरराष्ट्रीय महत्व के स्थलों की सूची में देश की एक और आर्द्रभूमि को शामिल की गई है। इसके साथ ही अब देश में इस प्रकार की आर्द्रभूमि की संख्या 42 हो गई है। दक्षिण एशिया में भारत में आर्द्रभूमि की संख्या सर्वाधिक है। लद्दाख में मौजूद आपस में जुड़ी हुई दो झीलों स्तार्तासापुक सो और सो कर को आर्द्रभूमि की सूची में शामिल किया गया है। ये झीलें लद्दाख के चांगथांग क्षेत्र में मौजूद हैं। इनको अंतरराष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमि की सूची में शामिल किया गया है। गौर करने वाली बात यह है कि स्तार्तासापुक सो झील का पानी मीठा है और सो कर का पानी खारा है जबकि ये दोनों झीलें आपस में जुड़ी हुई हैं। इसके साथ ही भारत में रामसार स्थलों की संख्या 42 हो गई है। पिछले महीने महाराष्ट्र की लोनार झील और आगरा की सुर सरोवर झील को इस सूची में जगह दी गई थी।

यही नहीं इससे पहले बिहार के बेगूसराय जिले में स्थित कबरताल झील को रामसार प्रस्ताव के तहत अंतरराष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमि की सूची में जगह दी गई थी। इसी साल अक्टूबर महीने में उत्तराखंड के देहरादून स्थित असन कंजर्वेशन रिजर्व को सूची में शामिल किया गया था। भारत के अन्य स्थल जिन्हें इस सूची में जगह मिली है उनमें ओडिशा की चिल्का झील, राजस्थान का केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, पंजाब की हरिके झील, मणिपुर की लोकटक झील और जम्मू कश्मीर की वुलर झील शामिल है। मालूम हो कि आर्द्रभूमि के संरक्षण के लिए साल 1971 में ईरान के रामसार में समझौते हुए थे।

देशभक्ति का अद्भुत जज्बा

मध्यप्रदेश के नक्सल प्रभावित बालाघाट जिले की किरनापुर तहसील के सेवती गांव के युवा वैभव मेंढे देशभक्ति, साहस और समर्पण की अनूठी कहानी लिख रहे हैं। भारतीय सेना में भर्ती होकर मोर्चे पर लड़ने की अदम्य इच्छा रखने वाले वैभव का भारतीय सेना में चयन तो हुआ था, किंतु दुर्घटना में घायल होने के चलते वे सेना के स्वास्थ्य परीक्षण में उत्तीर्ण न हो सके। नतीजतन सेना में भर्ती न हो सके। उन्होंने इस मलाल को संकल्प में बदला और गांव के कई युवाओं को सैनिक बनाने का बीड़ा उठा लिया।

बीते तीन वर्ष से वे ग्रामीण युवाओं को सेना के लिए तैयार कर रहे हैं। उनके नेतृत्व में अब तक छह युवा सैनिक बन चुके हैं। वैभव मेंढे किसान विठ्ठल राव मेंढे के बेटे हैं। उन्होंने 2007–08 में आमगांव, महाराष्ट्र में प्रशिक्षण लिया। दसवीं तक पढ़े वैभव का 2016 में असम में भारतीय सेना की रायफल फोर्स में चयन हो गया। परंतु ट्रक एक्सीडेंट में एक पैर में फ्रैक्चर होने के कारण वे मेडिकल जांच में अनुत्तीर्ण हो गए। उसके बाद ही से ही उन्होंने तय कर लिया कि भले वे स्वयं सेना में न जा सके, किंतु अपने गांव के युवाओं को प्रशिक्षण देकर सेना में भेजेंगे।

कैसे–कैसे प्रशिक्षण

– लंबी दूरी तक तेजी से दौड़ना।
– ठंडे पानी में डुबकी व दंड बैठक।
– साथी को पीठ पर उठाकर दौड़ना।
– जमीन व सीढ़ियों पर रेंगकर आगे बढ़ना।
– पस्त होने तक कठोर व्यायाम करना।

युवाओं को भारतीय सेना में भेजने के लिए निशुल्क प्रशिक्षण देने वाले युवा वैभव का कार्य सराहनीय है।

सेवा पथ पर आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

राशन पाकर हर्षाया बाबूराव

दिवाली के दो दिवस पूर्व नारायण सेवा संस्थान से राशन सामग्री सहायता पाकर बाबूराव और परिजन बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे– संस्थान के द्वारा दिए गए दीये जलायेंगे और राशन से मीठा बनाकर दीपावली मनायेंगे। वडगांव–गंगाखेड़ (परभणी) निवासी 40 वर्षीय बाबूराव दोनों पांवों से दिव्यांग है।

पत्नी इंदुमती दोनों आंखों से रोशनीहीन है। इने 10 वर्ष की एक बेटी है। भीख मांगकर गुजारा करने वाले इस परिवार पर कोरोना का ऐसा संकट आया कि दैनिकचर्या के साथ दो जून रोटी खाना भी दूभर हो गया। पति–पत्नी और बेटी रोटी–रोटी की मोहताज हो गई। दिव्यांग दम्पती भूख से इतने सताये गए कि पल–पल उन्हें मृत्यु करीब नजर आने लगी।

ऐसे परिवार की जानकारी जैसे ही संस्थान की परभणी शाखा को मिली तो उसने मदद करनी शुरू की। दो माह से निरन्तर राशन पाकर परिवार बहुत प्रसन्न है। सहयोग करने वाले हाथों एवं दानवीरों का दिल से दुआ दे रहा है। दीपोत्सव के दिन शाखा संयोजिका मंजू जी दर्डा ने परिवार को मिठाई भेंटकर हर संभव मदद का भरोसा भी दिलाया। आप द्वारा प्रेषित भोजन सामग्री सहयोग ऐसे गरीब दिव्यांग और मजदूर परिवारों का निवाला बन रहा है जिनकी आखिरी उम्मीद टूटने वाली थी, आपका सहयोग हजारों गरीब परिवारों के लिए खुशियों की सौगात है।

तीन ऑपरेशन के बाद चल पड़ा प्रीत

खेती करके जीवनयापन करने वाले सूरत गुजरात निवासी अजय कुमार पटेल के घर 11 वर्ष पहले प्री मैच्योर बेबी प्रीत का जन्म हुआ। जन्म के 6 माह तक बेबी को नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट में रखा गया। गरीब सिान अजय दुःख के तले कर्जदार भी हो गया पर कर भी क्या सकता था। सामान्य हालात होने पर गुजरात के सूरत, राजकोट और अन्य शहरों के प्रसिद्ध हॉस्पीटल्स में दिखाया पर कहीं पर भी उसे ठीक होने का भरोसा नहीं मिला। घर के पड़ोस में रहने वाले राजस्थान निवासियों ने अजय को नारायण सेवा में जाने की सलाह दी। पहली बार 2019 में दिव्यांग प्रीत को लेकर परिजन उदयपुर आए डॉक्टर्स ने ऑपरेशन के लिए परामर्श दिया और एक ऑपरेशन कर दिया। बच्चे का पांव सीधा हो गया। दूसरी बार फरवरी 2020 में संस्थान आये तब उसके दूसरे पांव का ऑपरेशन किया गया। दोनों पांवों के ऑपरेशन के बाद प्रीत वॉकर के सहारे चलने लग गया। इसे देख परिजन पुनः अक्टूबर 2020 में उसे संस्थान में लेकर आए तब तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब प्लास्टर खुल चुका है... केलीपर्स व जूते पहनने के बाद प्रीत अपने पांव चलने लगा है। अब वह और उसे परिजन प्रसन्न हैं।

नई जिंदगी दी संस्थान ने

रायपुर छत्तीसगढ़ से हम आये हैं। मेरा नाम जलेसी नेताम है। मेरा लड़का का नाम मनोज कुमार नेताम है। गाड़ी पर हाई टेंशन तार गिरने से अपना पांव गंवा बैठे मनोज कुमार नेताम। बिना पांव के जिंदगी जीना कितना दर्दनाक होता है, ये दर्द तो वो ही महसूस कर सकता है जिसके पांव ना हो। मनोज के पिता अपने नारायण सेवा संस्थान द्वारा अपने बेटे को निःशुल्क पांव लगाने पर बेहद खुश हैं।

मनोज के पिता बताते हैं अपने पैर, मनोज कुमार के अच्छे से लग गया और हम खुश है उम्मीद नहीं था कि हमारे लड़का के पैर लगेगा यहां आने के बाद विश्वास हो गया, पैर लग गया।

खुद मनोज कहते हैं पैर तो पहले थे, अपने पांव से नहीं चला लेकिन आज अपने पांव पे चल रहा हूं। मैं बहुत खुश हूं। मेरा पैर लग गया, मैं चल रहा हूं। मनोज को नई जिदंगी देने के लिए ये संस्थान को बहुत धन्यवाद देते हैं।

संस्थान द्वारा नवनिर्वाचित जिला प्रमुख एवं उपजिला प्रमुख का सम्मान

जिला परिषद के चुनाव में नवनिर्वाचित जिला प्रमुख सुश्री ममता कंवर पंवार एवं उपजिला प्रमुख पुष्कर लाल तेली का अभिनंदन नारायण सेवा संस्थान के जनसम्पर्क अधिकारी भगवान प्रसाद जी गौड़ एवं दिलीप सिंह जी ने पगड़ी, दुपट्टा, शॉल ओढ़ाकर व गुलदस्ता भेंटकर किया। साथ ही उन्हें संस्थान के सेवा प्रकल्पों की जानकारी देते हुए दिव्यांगों के सहायतार्थ आयोजित शिविरों हेतु आमंत्रित किया।

कौनसा मित्र साथ देगा?

एक व्यक्ति था उसके तीन मित्र थे। एक मित्र ऐसा था जो सदैव साथ देता था। एक पल, एक क्षण भी बिछुड़ता नहीं था। दूसरा मित्र ऐसा था जो सुबह शाम मिलता। और तीसरा मित्र ऐसा था जो बहुत दिनों में जब तब मिलता।

एक दिन कुछ ऐसा हुआ की उस व्यक्ति को अदालत में जाना था और किसी कार्यवश साथ में किसी को गवाह बनाकर साथ ले जाना था। अब वह व्यक्ति सब से पहले अपने उस मित्र के पास गया जो सदैव उसका साथ देता था और बोला–मित्र क्या तुम मेरे साथ अदालत में गवाह बनकर चल सकते हो?'

वह मित्र बोला– माफ करो दोस्त, मुझे तो आज फुर्सत ही नहीं। उस व्यक्ति ने सोचा कि यह मित्र मेरा हमेशा साथ देता था। आज मुसीबत के समय पर इसने मुझे इंकार कर दिया। अब दूसरे मित्र की मुझे क्या आशा है। फिर भी हिम्मत रखकर दूसरे मित्र के पास गया जो सुबह शाम मिलता था, और अपनी समस्या सुनाई। दूसरे मित्र ने कहा कि– मेरी एक शर्त है कि मैं सिर्फ अदालत के दरवाजे तक जाऊँगा, अन्दर तक नहीं।' वह बोला कि– बाहर के लिये तो मै ही बहुत हूँ मुझे तो अन्दर के लिये गवाह चाहिए। फिर वह थक हारकर अपने तीसरे मित्र के पास गया जो बहुत दिनों में मिलता था, और अपनी समस्या सुनाई। तीसरा मित्र उसकी समस्या सुनकर तुरन्त उसके साथ चल दिया।

अब आप सोच रहे होंगे कि... वो तीन मित्र कौन हैं... जैसे हमने तीन मित्रों की बात सुनी वैसे हर व्यक्ति के तीन मित्र होते हैं। सब से पहला मित्र है हमारा अपना शरीर हम जहा भी जायेंगे, शरीर रूपी पहला मित्र हमारे साथ चलता है। एक पल, एक क्षण भी हमसे दूर नहीं होता। दूसरा मित्र है शरीर के सम्बन्धी जैसे–माता–पिता, भाई–बहन, मामा– चाचा इत्यादि जिनके साथ रहते हैं, जो सुबह – दोपहर शाम मिलते हैं। और तीसरा मित्र है– हमारे कर्म जो सदा ही साथ जाते हैं। अब आप सोचिये कि आत्मा जब शरीर छोड़कर धर्मराज की अदालत में जाती है, उस समय शरीर रूपी पहला मित्र एक कदम भी आगे चलकर साथ नहीं देता। जैसे कि उस पहले मित्र ने साथ नहीं दिया। दूसरा मित्र– सम्बन्धी। श्मशान घाट तक यानी अदालत के दरवाजे तक राम नाम सत्य है कहते हुए जाते हैं तथा वहाँ से फिर वापिस लौट जाते है। और तीसरा मित्र आपके कर्म हैं। कर्म जो सदा ही साथ जाते है चाहे अच्छे हो या बुरे।

मकर सक्रांति महापर्व

भारत एक धर्म निरपेक्ष और सांस्तिक विविधताओं वाला देश है जिसमें अनेक पर्व मनाए जाते हैं, व्रत उपवास रखे जाते हैं यही कारण है कि भारत में पूरे साल हर्षोल्लास का वातावरण बना रहता है। इन्हीं में एक पर्व है मकर संक्रांति यह हिन्दू धर्म का प्रमुख पर्व है। ज्योतिष के अनुसार मकर संक्रांति के दिन सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है सूर्य के एक राशि से दूसरी में प्रवेश करने को संक्रांति कहते हैं । दरअसल मकर संक्रांति में मकर शब्द मकर राशि को इंगित करता है जबकि संक्रांति का अर्थ संक्रमण अर्थात प्रवेश करना है चूंकि सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता हैं, इसलिए इस समय को मकर संक्रांति कहा जाता है। मकर संक्रान्ति पर्व को कहीं–कहीं उत्तरायण भी कहा जाता है।

मकर संक्रांति से जुड़ी कई प्रचलित पौराणिक कथाएं हैं। ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान भानु अपने पुत्र शनिदेव से मिलने उनके लोक जाते हैं। शनिदेव मकर राशि के स्वामी हैं। इसलिए इस दिन को मकर सक्रांति के नाम से जाना जाता है। यह भी माना जाता है मकर संक्रांति के ही दिन भागीरथ के पीछे पीछे माँ गंगा मुनि कपिल के आश्रम से होकर सागर में मिली थीं। अन्य मान्यता है कि माँ गंगा को धरती पर लाने वाले भागीरथ ने अपने पूर्वजों का इस दिन तर्पण किया था। मान्यता यह भी है कि तीरों की शैय्या पर लेटे हुए पितामह भीष्म ने प्राण त्यागने के लिए मकर संक्रांति के दिन का ही चयन किया था। यह विश्वास किया जाता है कि इस अवधि में देहत्याग करने वाला व्यक्ति जन्म मरण के चक्र से पूर्णतरू मुक्त हो जाता है। जैसी विविधता इस पर्व को मनाने में है वैसी किसी और पर्व में नहीं। त्योहार के नाम, महत्त्व और मनाने के तरीके प्रदेश और भौगोलिक स्थिति के अनुसार बदल जाते हैं। दक्षिण भारत में इस त्योहार को पोंगल, तो वहीं उत्तर भारत में इसे लोहड़ी, खिचड़ी, उत्तरायण, माघी, पतंगोत्सव आदि के नाम से जाना जाता है मध्यभारत में इसे संक्रांति कहा जाता है।

मकर संक्रांति के विशेष पकवान –

शीत ऋतु में वातावरण का तापमान बहुत कम होने के कारण शरीर में रोग और बीमारियां जल्दी घात करती हैं। इसलिए इस दिन गुड़ और तिल से बने मिष्ठान्न या पकवान बनाये, खाये और बांटे जाते हैं। इन पकवानों में गर्मी पैदा करने वाले तत्वों के साथ ही शरीर के लिए लाभदायक पोषक पदार्थ भी मौजूद होते हैं।इसलिए उत्तर भारत में इस दिन खिचड़ी का भोग लगाया जाता है तथा गुड़–तिल, रेवड़ी, गजक आदि का प्रसाद बांटा जाता है।

सम्पादकीय

परोपकार मानव का श्रेष्ठ गुण है। बहुत पहले एक चलचित्र में गीत आया था – 'अपने लिये जिये तो क्या जिये ?' सचमुच परमात्मा ने मानव की रचना इसीलिये की है कि वह औरों के हित जीना सीखे। अपने लिये तो हरेक पशु/प्राणी जिन्दा रहता ही है। अपना–अपना ही सोचे, दूसरों के लिये कोई चिंता न रखे, यही पशुत्व कहा जाता है। मनुष्य का धर्म है कि वह अपने के साथ–साथ औरों की भी सोचे। और जो औरों का पहले सोचे और अपना बाद में वह देवत्व प्राप्त व्यक्ति होता है। कई बार व्यक्ति के मन में यह विचार आता है कि मैं अपना तो पूरा कर नहीं पा रहा फिर ऐसी स्थिति में दूसरों का क्या सोचूं ? यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि हम दूसरों के बारे में सोचने का अर्थ यह निकालते हैं कि दूसरों की हर सुख–सुविधा का ध्यान रखना है। ऐसा नहीं है। अपनी जितनी सामर्थ्य है, जितनी सुविधा है उसका एक अंश भी यदि औरों के लिये करेंगे तो भी वह परोपकार ही है। परोपकार के लिए पूँजी, साधन या अवसर प्रधान नहीं होकर भाव प्रधान हैं।

कुछ काव्यमय

जीने की कामना
सब जीवों में समान है।
इसे ही जिजीविषा
कहते विद्वान है।
पर जो केवल अपने लिये जीता है।
वह अपने कर्मों में
लगाता पलीता है।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

सच्चे कंगन

सोने– चांदी गहने के हमारे तन की शोभा होते हैं, किंतु निष्ठा, करुणा और मानवता तो हमारी आत्मा के आभूषण हैं।

एक बालक नित्य विद्यालय पढ़ने जाता था । घर में उसकी माता थी। मां अपने बेटे पर प्राण न्योछावर किए रहती थी। उसकी हर मांग पूरी करने में आनन्द अनुभव करती। पुत्र भी पढ़ने– लिखने में बड़ा परिश्रमी था। एक दिन दरवाजे पर किसी ने माई ओ माई पुकारते हुए दस्तक दी। वह द्वार पर गया देखा कि एक फटेहाल बुढ़िया हाथ फैलाए खड़ी थी। उसने कहा बेटा कुछ भीख दे दे।

बुढ़िया के मुंह से बेटा सुनकर वह भावुक हो गया और मां से आकर कहने लगा कि एक माता जी खाना मांग रही है। उस समय घर में कुछ खाने की चीज थी नहीं इसलिए मां ने कहा, बेटा, – रोटी साग तो कुछ बचा नही है। चाहो तो चावल दे दो।

पर बालक ने हठ करते हुए कहा – मां, चावल से क्या होगा ? तुम जो अपने हाथ में सोने का कंगन पहने हो, वहीं दे दो न इस बेचारी को। मैं जब बड़ा होकर कमाऊंगा तो तुम्हें दो कंगन बनवा दूंगा। मां ने बालक का मन रखने के लिए सोने का कंगन कलाई से उतारा और कहा– लो दे दो। बालक खुशी – खुशी भिखारिन को दे आया। भिखारिन को तो मानो खजाना ही मिल गया। कंगन बेचकर उसने परिवार के बच्चों के लिए अनाज, कपड़े आदि जुटा लिए। उसका पति अंधा था। उधर वह बालक पढ–लिखकर विद्वान हुआ, काफी नाम कमाया। एक दिन वह मां से बोला, मां, अपने हाथ का नाप दे दो, मैं कंगन बनवा दूं। उसे अपना वचन याद था। माता ने कहा मैं इतनी बूढ़ी हो गई हूं कि अब कंगन शोभा नहीं देंगे। हां, कलकत्ते के तमाम गरीब, दीन– दुःखी बीमार बालक विद्यालय और चिकित्सा के लिए मारे – मारे फिरते हैं। जहां निःशुल्क पढ़ाई और चिकित्सा की व्यवस्था हो ऐसा कर दे। मां के उस यशस्वी पुत्र का नाम था– ईश्वरचन्द्र विद्यासागर।

– कैलाश 'मानव'

स्वकल्याण नहीं, परकल्याण के लिए जिएँ

परोपकार रहित मनुष्य के जीवन को धिक्कार है। वे पशु भी धन्य हैं, मरने के बाद जिनका चमड़ा भी उपयोग में लाया जाता है। एक व्यक्ति था बहुत ही धार्मिक। हमेशा प्रभु भक्ति में लीन रहता था। दिन–रात के 24 घण्टों में 18 घण्टे भगवद्नाम रटन में ही निकलता। समय बीता, व्यक्ति वृद्ध हो गया। उस व्यक्ति के प्राण छूटे। वह प्रभु के धाम गया, प्रभु ने उसे स्वर्ग में स्थान दिया। स्वर्ग में एक दिन प्रभु श्री नारायण सभी स्वर्गवासियों को पुरस्कार देने आए। प्रभु के पास बहुत से पुरस्कार थे। कई लोग मलीन व गरीब लग रहे थे, लेकिन वह व्यक्ति बहुत ही शालीन और साफ–स्वच्छ नजर आ रहा था। प्रभु उनके करीब आए, उनके पास खड़े एक मलीन व्यक्ति को हीरे से जड़ित मुकुट पहनाया। फिर आगे बढ़े और उस व्यक्ति को सोने का मुकुट तथा उसके आगे वाले व्यक्ति को रतन जड़ित मुकुट पहना दिया। उस व्यक्ति के मन में क्षोभ–भाव आ गए और भगवान से पूछ बैठा– प्रभु! पृथ्वी लोक में तो अन्याय देखा ही, परन्तु अन्याय तो स्वर्ग में भी है। प्रभु ने पूछा कैसे? उस व्यक्ति ने कहा– प्रभु इस मलीन व्यक्ति को तो हीरे का मुकुट और मुझ प्रभु भक्त को, जिसने पल–पल आपको भजा, उसे मात्र सोने का मुकुट क्यों? प्रभु श्रीनारायण ने कहा– आपने केवल अपने कल्याण के लिए मुझे भजा। किसी और की सेवा नहीं की। परन्तु मलीन व गरीब दिखने वाले इस व्यक्ति ने हजारों गरीब, जरूरतमंदों की सहायता की। इसलिए उसने परकल्याण करके मुझे प्रसन्न किया। मैं स्वकल्याणी की अपेक्षा परकल्याणी को अधिक स्नेह करता हूँ। हमें इस कहानी से शिक्षा लेनी चाहिए कि स्व–कल्याण जरूर करें, परन्तु परकल्याण के कार्य जैसे अनाथों की सेवा, बीमारों की चिकित्सा, वृद्धों को सहारा, दिव्यांगों की सहायता, वृद्ध एवं विधवा माताओं व भूखों को भोजन, प्यासों को पानी और भटके लोगों को रास्ता दिखाने का कार्य करके प्रभु के चहेते बनने का प्रयास करना चाहिए। मनुष्य जीवन में सेवा कार्य करना बहुत ही विशेष कार्य है। सेवा से जीवन में सुख–समृद्धि और सार्थक चमत्कार होते हैं।

– सेवक प्रशान्त भैया

अच्छा होता है खुदा का साथ

एक बार सूफी संत खय्याम अपने शिष्य के साथ बीहड़ से जा रहे थे। उनके नमाज पढ़ने का समय हुआ तो, गुरु और शिष्य दोनों नमाज पढ़ने के लिए बैठे ही थे कि उन्हें सामने से एक शेर की गर्जना सुनाई दी।

शिष्य बेहद भयभीत हो गया और नजदीक के ही पेड़ पर चढ़ गया। लेकिन खय्याम खामोशी से नमाज पढ़ते रहे। शेर वहां आया और चुपचाप आगे निकल गया। उसके जाने के बाद शिष्य पेड़ से नीचे उतरा। इस तरह नमाज खत्म होने के बाद वे आगे बढ़े। थोड़ी देर बाद जब संत खय्याम को एक मच्छर ने काटा, तो उसे मारने के लिए उन्होंने अपने गाल पर चपत लगाई। यह देख वह शिष्य बोला, 'गुरुदेव अभी–अभी जब शेर आपके समीप आया था, तब आप बिल्कुल न घबराए लेकिन एक मच्छर के काटे जाने पर आपको गुस्सा आ गया।'

ख्य्याम ने उत्तर दिया कि, 'तुम ठीक कहते हो, किंतु तुम यह भूल रहे हो जब शेर आया था, तब मैं खुदा के साथ था, जबकि मच्छर काटे जाने के समय एक इंसान के साथ, यही वजह है कि मुझे शेर से डर नहीं लगा और मैं एक मच्छर से डर गया।' इंसान अगर भगवान के साथ है तो हमेशा सुरक्षित रहता है और मनुष्य के साथ तो उसे कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए भगवान की आराधना करते हुए अपनी जिंदगी को बेहतर बनाना चाहिए।

संस्थान से मिले अंग, पाया रोजगार

मैं किशन लाल भील, उम्र 36, अचलाना, उदयपुर का रहने वाला हूँ। आठवीं कक्षा उत्तीर्ण हूँ। मैंने सन् 1995 से बस कण्डक्टरी का कार्य करना चालू किया था। बस का रूट भीण्डर से बडी सादडी था। 22 मार्च 2000 को बस का एक्सीडेंट हो गया। उस हादसे में कानोड़ निवासी एक व्यक्ति की मौत हो गई एवं 22 लोग घायल हो गये। उस हादसे में मेरे दोनों पैर कट गये। वहां के स्थानीय लोगों ने मुझे महाराणा भूपाल चिकित्सालय उदयपुर में भर्ती करवाया। मेरे 4 ऑपरेशन हुए परन्तु सभी असफल रहे। फिर जिन्दगी बैसाखियों के सहारे चलने लगी। मेरे पैरों की स्थिति के कारण, हादसे के चार साल बाद नारायण सेवा संस्थान ने ऑटिफिशयल पैर लगाये गये, मैं बिना बैसाखियों के चलने लगा। परन्तु रोजगार के लायक नहीं था। जिसमें मैं अपने परिवारों का गुजारा कर सकूं मैंने संस्थान में आकर अपनी आपबीती सुनाई। संस्थान ने मेरे दुःख सुनकर मुझे रोजगार से जोड़ने के लिए चाय– नाश्ते का ठेला एवं आश्वयक सामग्री प्रदान की ताकि मैं अपने परिवार को भरण–पोषण कर सकूं। मैं संस्थान का बहुत–बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश का यह दृढ़ मत था कि दुनिया में अच्छे लोगों की बहुतायत है, इसकी पुष्टि समय समय पर होती रही। नारायण सेवा संस्थान जिस तरह से धीरे धीरे आकार ग्रहण कर रहा था, इसका ज्वलंत उदाहरण था। कैलाश उदयपुर का भी ऋणी था, उदयपुर की वजह से ही वह इतना सब कर पाया और भविष्य में अभी और क्या अर्जित करना है, उसे भान तक नहीं था। उसने स्वयं को मानव जीवन की सेवा में संलिप्त कर लिया था। उसे अपने अग्रवाल कुल में जन्म लेने का गर्व था मगर वह नहीं चाहता था कि उसकी पहचान वर्ग विशेष तक ही सीमित हो, इसी कारण एक दिन उसने अपने नाम के आगे 'मानव' उपनाम जोड़ दिया।

यह सब अत्यंत सरलता से चल रहा था तभी मानों उस पर कहर टूट पड़ा। उसका उदयपुर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना जैसे किसी को नहीं सुहाया हो, उसके ट्रांसफर ऑर्डर आ गये और उसे बांसवाड़ा जाने को कहा गया। उदयपुर में संस्था काम काम काफी फैल गया था, कई प्रकल्प शुरू कर दिये थे जो अभी अधूरी अवस्था में थे, निर्माण कार्य जारी था, बच्चे भी बढ़ गये थे, एक ही विकल्प था कि किसी तरह यह स्थानान्तरण रूकवाया जाये।

अंश–158

गुणकारी तुलसी

तुलसी ब्लड कौलेस्ट्रोल, एसिडिटी, पेचिस, कोलाइटिस, स्नायु दर्द, सर्दी–जुकाम, सिरदर्द, उल्टी–दस्त, कफ, चेहरे की कान्ति में निखार , मुंहासे, सफेद दाग, कुष्ट रोग, मलेरिया, खांसी, दाद, खुजली, गठिया, दमा, मरोड़ नेत्र रोग, पथरी नकसीर, फेफड़ों की सूजन, अल्सर, पायरिया, शुगर, मूत्र रोग आदि में फायदेमंद हैं।

तुलसी मनुष्य के शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक हैं। मलेरिया, डेंगू, खांसी, सर्दी–जुकाम आदि बीमारियों से बचाती है। तुलसी का विशेष अर्क भी रामा, श्याम, बरबरी,

कपूरी व जंगली पांच तरह की तुलसी के पौधों की पत्तियों को मिश्रित कर तैयार किया जा सकता है।

घाव भरने, घुटनों और सिर दर्द में भी फायदेमंद है करेला

करेले का उपयोग मधुमेह से बचाव में हर कोई करता है। आज जानते हैं इसके दूसरे गुणों के बारे में। चोट से घाव बनने पर करेले की पत्तियों को पीस कर हल्का गर्म करें और घाव पर लगाएं। ठीक हो जाएगा। इसके एंटीबैक्टीरियल गुण के कारण संक्रमण नहीं होने देते हैं। पथरी का दर्द होने पर करेले का जूस पीएं। रोज करेले का जूस पीने से न केवल दर्द कम होता है बल्कि पथरी को बाहर निकालने में मदद करता है। जूस कितनी मात्रा में लेना है इसके लिए डॉक्टरी सलाह लें। सिरदर्द होने पर इसकी पतियों का पेस्ट बनाकर सिर पर 15–20 मिनट तक लगाएं। घुटने के दर्द में करेले को हल्का भून लें और इसको कॉटन में बांध लें फिर इसे घुटने पर लगाएं।

अनुभव अमृतम्

पूरा विश्व एक मस्तिष्क सा है इस मस्तिष्क का हर भाग संवेदनशील है। अणु, परमाणु सृजन, विध्वंस। बच्चे ने पिताजी से पूछा सृजन क्या होता है? कल हमारे पास इन्स्पेक्टर साहब आयेंगे पूछेंगे। मुझे समझ में नहीं आया। जितने में एक छः साल के छोटे भैया ने गीली रेत में पैर डालकर के मकान बना लिया, और बोला ये दरवाजा, ये खिड़की किसी आर्किटेक्ट की जरूरत नहीं, किसी इंजीनियर की जरूरत नहीं, न सीमेन्ट चाहिये, न ईटें चाहिये, ये रेत का मकान बन दिया। बच्चा बड़ा खुश। बच्चा पिताजी के पास दौड़ा –दौड़ा आया और बोला अपने घर का मकान बन गया। किराये के मकान को कितनी बार बदलना पड़ा? आपकी रातों की नींद उड़ गई। मकान मालिक ने बोला आप पन्द्रह दिन बाद मकान खाली कर देना। हमारे को जरूरत है। हमारे ब्याह है, हमारे सगाई है, हमारे एनीवर्सरी या शादी की वर्षगांठ है, हमारे जन्मदिवस है, खाली करना तो करना ही है। नहीं तो हम झगड़ा करेंगे। आपको चैन से नहीं रहने देंगे।

रातों की नींद उड़ गई। दूसरा मकान ढूंढा। कैलाश जी का उदयपुर में प्रथम किराये का मकान एक प–सोलह। विशाल किराणा स्टोर के सामने, धानमण्डी के मालिक। अद्भुत क्या से क्या हो गया? क्या से क्या नहीं बन गया? तो हवाई जहाज उड़ने की तैयारी है। धीरे–धीरे सरक रहे हैं। अपने पहिये के बल धीरे–धीरे चल रहा– अरे! इतना धीरे चलता है हवाई जहाज? अरे! भाई रूक तो सही इतनी क्या उत्सुकता है? उत्सुकता, जिज्ञासा, यह कैलाश के मन में रही है। बचपन से जानने की इच्छा जहाज कैसे चलती है? कार कैसे चलती है? रेलगाड़ी का कोयले का भाप का इंजन चला करता था। मावली उदयपुर से मावली तक सरदार साहब पूर्व इंजीनियर साहब, पूर्व ड्राइवर साहब ने मुझे इंजन के केबिन में बिठा दिया था मेरी उत्सुकता से। कमला जी पीछे वाले डिब्बे में बैठी थी। ये कोयला लिया जा रहा था। बड़े–बड़े बेलचे से ये कोयले के बड़े–बड़े ढेर पड़े हैं, और दरवाजा खोला। अग्नि धधक रही अन्दर उसमें कोयला झोंक दिया। दरवाजा बंद कर दिया। भाप और अधिक बन गई। छुक–छुक गाड़ी चलने लग गई। हमारे देह–देवालय में भी कोयला कौनसा झोंका जाता है?

सेवा ईश्वरीय उपहार– 37 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023